Artistic Narration Dec. 2014, Vol. VI http://anubooks.com/product/artistic-narration
(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

12

पटना कलम

डॉ0 राखी कुमारी*

भगवान बुद्ध एवं भगवान महावीर की जन्मस्थली बिहार में कला की समृद्ध परम्परा रही है, चाहे वह लोक हो या आधुनिक कला। यही कारण है कि इसका भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में महत्वपूर्ण स्थान है। सभ्यता की पहली किरण यही से प्रस्फुटित हुई है। बिहार की राजधानी पटना जिसे हम कई नामों से जानते हैं :– पाटलिपुत्र, पाटलि, पाटलिग्राम, कुसुमपुर, पुल्पपुर, पुष्पावती, श्रीनगर आदि।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने शासनकाल में पाटलिपुत्र में एक बहुत भव्य राजप्रसाद बनवाया था। जो काष्ठ का था और भवन स्थापत्य कला का उत्कृष्ठ नमूना था। मैगस्थनीज (यूनानी राजदूत) के अनुसार यह नगर चतुर्भुजाकार था, जिसकी लम्बाई नौ मील चौड़ाई डेढ़ मील थी। नगर के उद्यान और भवन अत्यधिक कलात्मक थे। एक यवन पर्यटक ने लिखा है ''यहाँ का राज–प्रसाद सूसा और एक बतना में बने पारसी सम्राटों के महल से अधिक सुन्दर था''।

मूगलों के शासन काल में यहाँ के कला संस्कृति पर मुगलों का प्रभाव देखने को मिलता है। सन् 1586 में पहला अंग्रेज यात्री राल्फ पिच पटना आये, उन्होंने लिखा है कि यह एक व्यवसायिक नगर है। जो गंगा नदी के किनारे स्थित है और यहाँ के दैनिक जीवन में कला के साथ शिल्पों का प्रयोग देखने को मिलता है।

सत्रहवीं शताब्दी के बिहार ईस्ट इण्डिया कम्पनी, डच, चीनी, पुर्तगाली, ब्रिटिशर्स का प्रमुख व्यवसायिक केन्द्र बना, पटना उसका मुख्यालय बना। पटना में एक व्यापारी थे, जिसका नाम हिरानन्द साहा था, उनका व्यापार कई देशों से होता था। उनको लोग जगत सेठ के नाम से भी जानते थे और उन्हें कला में विशेष लगाव था। इनके दरबारी चित्रकार भी थे जो इनके दरबार, गलियारे, बैठकखाने आदि को सजाते थे। यहाँ के नवाब जमींदार भी कला प्रेमी थी वे चित्रकारों से अपने पूर्वजों, प्रियजनों के चित्र बनवाते थे। अन्य विषयों पर भी यहाँ चित्रांकन की परम्परा रही है। ब्रिटिश अधिकारी भी अपनी वीरता, लडाई, युद्ध के चित्र बनवाना पसन्द करते थे। धीरे–धीरे यहाँ की कला पर कम्पनी शैली का प्रभाव पड़ने लगा।

औरंगजेब के शासनकाल में कला की उपेक्षा की गयी। राजाश्रय के अभाव में चित्रकार यत्र–तत्र प्रस्थान कर अपने जीविकोपार्जन की जुगाड़ में जुटने लगे। सन् 1790 में चित्रकारों का एक दल मुर्शीदाबाद से बिहार जीविकोपार्जन के लिए आए। वे यहाँ के जमींदार घराने टेकारी, आरा, बेतिया, पूर्णियाँ, गया, डुमराव, जसीडीह, दरभंगा आदि पर बस गए। एक बड़ा दल पटना सिटी में बस गए। ये सभी कायस्थ जाति के वैष्णव थे। ये चित्रकला में पारंगत तो थे ही साथ में परिश्रमी और कुशाग्र बुद्धि के भी थे।

**सहायक प्राध्यापिका, छापा कला विभाग, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय, पटना।*

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

अधिकतर चित्रकारों ने अंग्रेजों की संगत में रहकर अंग्रेजी बोलनी और लिखनी भी सीख ली। इन कलाकारों ने जिस शैली को जन्म दिया उसे पटना कलम के नाम से जाना जाने लगा। पटना कलम को कंपनी शैली भी कहते हैं क्योंकि इन चित्रों को कम्पनी अधिकारियों के द्वारा बनवाये जाते थे। पटना कलम के चित्रों के खरीददार दो प्रकार के थे, एक पटना के धनाद्य रईस तथा दूसरे थे विदेशी व्यापारी। रईसों की पसन्द व्यक्ति चित्र और फूलों तथा पक्षियों के चित्रों की थी।

विदेशी खरीददारों की पसन्द भारतीय संस्कृति तीज–त्योहार, वेश–भूषा, परम्परा रीति–रिवाज तथा कुटीर उद्योग–धंधा से अधिक थी। इसका कारण यह भी था कि वे यहाँ की गरीबी, व्यवसायिक दूर्दशा को दिखाकर भारत पर ब्रिटिश शासन और प्रभुत्व के महत्व को उजागर करना। अतः चित्रकार बाजार की माँग के अनुरूप चित्रों का निर्माण करते थे और मुख्य खरीददार के रूप में विदेशी व्यापारी, अफसर तथा लेखकों का समूह सामने आ रहा था।

पटना कलम के चित्रकार अपने तूलिका बनाने में काफी परिश्रम करते थे। वे गिलहरी की पूँछ अथवा ऊँट, सूअर, हिरण आदि के बालों को काटकर उबालते थे। फिर उसे कबूतर याचील के पंखों में बाँधकर तूलिका बनाते थे। पटना कलम के कलाकार रंग भी स्वयं बनाते थे और इसे बनाने में उन्हें महीनों लग जाते थे। एक चित्र बनाने में छह महीने तक लग जाते थे। सफेद रंग काशगरी मिट्टी औरसीप को जलाकर, पीला रंगा रामरस से, लाल रंग लाह सिन्दूर, सिंगरफा और गेरू से, नीला रंगा नीला और लाजु पत्थर से और कालीख से काला रंग बनाते थे। आज भी इन रंगों की ताजगी हम चित्रों में देख सकते हैं।

पटना कलम के चित्रकार चित्र में रेखांकन के लिए चितेरों की मदद नहीं लेते थे वे स्वयं सीधे कागज पर तूलिका से चित्र बनाते थे। चित्रों में तूलिका के 'स्ट्रोक्स' से हम कलाकारों को पहचान सकते हैं। चित्रों में सोने का प्रयोग भी किया जाता था। चित्रकार रंग में गोंद का प्रयोग करते थे, जिससे चित्रों का आकर्षण बढ़ जाता था। चित्रों को बनाने के लिए बाँस से बने कागज, हाथी दाँत, अबरक का प्रयोग आधार के रूप में किया जाता था।

पटना कलम के चित्रों का विषय–वस्तु के आधार पर छः भागों में बाँटा जा सकता है :–

(1) दैनिक जीवन, उद्योग–धंधों (व्यवसाय) पर आधारित चित्र जैसे–धोबी, कसाई, कुली, कहार, नौकरानी, पीलवान, मेहतर, दरबान, डाकिया आदि।

(2) मांगलिक पर्व, त्योहार और उत्सवों के चित्र जैसे–पालकी, डोली, दीवाली, होली, दाह संस्कार, नृत्य–संगीत आदि।

(3) मुखाकृति (शबीह) चित्रण।

(4) वस्तु–चित्रण, दृश्य चित्र और स्थापत्य कला के चित्र।

(5) पशु–पक्षी।

(6) अलंकारिक, सुलेख कला।

पटना कलम के चित्रकारों ने कागज, अभरख और हाथी दाँत को चित्रों का माध्यम बनाया। अभरख पर प्रायः जनजीवन के ही चित्र देखने को मिले हैं और हाथी दाँत पर अधिकतर प्रोहेट ही बनाये गये थे। उस समय पर्दा प्रथा थी। अतः संभ्रांत और कुलीन स्त्रियाँ के चित्र देखने को नहीं

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

मिलते। जो चित्र स्त्रियाँ के मिले हैं वे संभवतः नंत्यांगनाओं और रूप जीवाओं के चित्र हैं जिन्हें प्रायः रईस वर्ग अपने वैभव के प्रतिक के रूप में रखते थे।

पटना कलम के चित्र बाजार और मूल्य आधारित थे। इसलिए चित्रों में विषयवस्तु के लिए आवश्यकता पर ही अधिक बल दिया गया। यहाँ तक कि फूलों और पक्षियों के चित्रण में भी अधिक आवश्यकता होने पर मात्र एक टहनी ही बनाई गयी। स्पष्ट है कि मुगलकालीन चित्रों के जो प्राण थे यानी बैकग्राउण्ड, लैंडस्केप वे पटना कलम के चित्रों से लुप्त हो गये। स्पष्टतः पटना कलम के चित्रों को देखने से पता चलता है कि मुगलकालीन शाही चित्रों की विरासत लिए इन चित्रकारों ने कितनी तत्परता से मध्यकालीन रूढ़ियों को तोड़ दिया। वहाँ तो दरबारी शानो–शौकत, शिकार–युद्ध, राग–रागिनी, बारहमासा का चित्रण हो रहा था और कहाँ ये चित्रकार पटना आकर सामान्य जन–जीवन का चित्रण करने लगे।

पटना कलम के चित्रों ने ही भारतीय कला को एक नई दिशा दी और स्वतंत्र चित्रकला की शुरूआत हुई। चित्रकला को राजकीय संरक्षण के दासत्व से मुक्ति मिली। फलस्वरूप स्वतंत्र चित्रकारिता ने स्वदेशी और राष्ट्रयीता की भावना को न केवल पोषित किया बल्कि स्वतंत्र भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पटना कलम के प्रमुख कलाकार

1. **सेवक राम (सन् 1770–1830) –** सेवक राम जी पटना कलम के प्रथम कलाकार माने जाते हैं। ये बनारस के राजा के दरबारी चित्रकार थे, परन्तु आश्रयदाता और अपने पूर्वजों की मृत्यु के बाद पटना में आकर बस गये। ये पेन्सिल से पहले रेखांकन नहीं करते थे सीधे तूलिका से रेखांकन करते थे, जिसे मुगल शैली में स्याह कलम कहा जाता था। इनके प्रमुख चित्र हैं – सामान बेचता लाला, दर्जी, मछली बेचने वाला, फल बेचने वाला आदि। सेवक राम फरमाइशी शबीह भी बनाते थे।
2. **हुलास लाल (सन् 1785–1875) –** हुलास लाल मुगल चित्रकार मंसूर की तरह पशु–पक्षी चित्रण में माहिर थे। इनके चित्रों मुगल और कंपनी शैली का मेल स्पष्ट नजर आता है। (चित्र रचना प्रक्रिया मुगल शैली की तरह और प्रकाश–छाया का चित्रण कंपनी शैली के समान) इनके चित्रों में सेवक राम जी का स्पष्ट प्रभाव दिखता है। इनके प्रमुख चित्र हैं – एक मैना, अकेली चिड़िया फूल की डाली पर, दो चिड़िया एक डाल पर, तोता आदि।
3. **जयराम दास (1795–1880) –** जयराम दास ''स्याह कलम'' के माहिर चित्रकार थे, जो मात्र काली रेखाओं से चित्रांकन करते थे। ये माइका पर चित्रकारी करने में भी माहिर थे। इनके बने चित्रों का प्रयोग मोहर्रम पर ताजिया सजसे में होता था।
4. **फकीरचन्द लाल (सन् 1790–1865) –** फकीरचन्द लाल की लोदी कटरा में एक विख्यात कार्यशाला थी। जहाँ लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस और मुर्शिदाबाद से कला के छात्र शिक्षा लेने आते थे। ये स्याह–कलम के चित्र बनाते थे जो रेखा प्रधान थे। शबीह, चित्रण और व्यवसाय के चित्र भी यह बखूबी बनाते थे। इनके चित्र इंडियन ऑफिस लाइब्रेरी लंदन में संग्रहित है।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

इसके अतिरिक्त शिवलाल साहिब (सन् 1817–1887), महिला कलाकार दक्षो बीबी एवं सोना बीबी, शिवदयाल लाल (सन् 1850–1887), बहादुर लाल (सन् 1890–1942), ईश्वरी प्रसाद वर्मा (सन् 1870–1950) आदि पटना कलम के कलाकार थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. बिहार इतिहास एवं संस्कृति – प्रमोदानन्द दास/कुमार अमरेन्द्र लुसेन्टस प्रकाशन, पृष्ठ सं0 269–270.
2. पटना कलम – श्याम शर्मा, डॉ0 सुधाकर शर्मा, सचिव, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पृष्ठ सं0–65, 68, 70, 72.
3. सौ साल में बिहार – श्याम शर्मा, शिक्षा विभाग, बिहार, पृष्ठ सं0 3 एवं 4.
4. बिहार की समकालीन कला – विनय कुमार, कला संस्कृति एवं युवा विाागा, बिहार सरकार, पृष्ठ सं0 11.
5. कला – सैद्धांतिक खण्ड–2 लक्ष्मी नारायण नायक, प्रकाशक श्रीमती भादू देवी, पृष्ठ सं0 169.
6. बंगाल शैली की चित्रकला – डॉ0 नैन भटनागर, डॉ0 जगदीश चंद्रिकेश्ज्ञ अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ सं0 2.
7. पटना कलम का सफरनामा – शीला मोहन प्रसाद, शैलेन्द्र कुमार सिन्हा, मुद्रक शिवा कम्प्यूटर, बेकापुर, मुंगेर, पृष्ठ सं0 2, 3.
8. चित्र परंपरा और बिहार – श्याम शर्मा, मुद्रक एवं प्रकाशक – वातायन मीडिया एण्ड पब्लिकेशन्स प्रा0 लि0, पृष्ठ सं0 67.
9. भारतीय चित्रकला एवं मूर्त्तिकला का इतिहास – डॉ0 रीता प्रताप (वैश्य) राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ सं0 306.

Artistic Narration Dec. 2014, Vol. VI http://anubooks.com/product/artistic-narration
(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

जैन चित्रकला की एक विशिष्ठ उपलब्धि : सचित्र विज्ञप्ति–पत्र

13

डॉ अलका चढ्ढा* **विभा लोधी****

भारतीय दर्शन साहित्य और कला के क्षेत्र में जैनों का बहुत बड़ा योगदान है । जैन साहित्य प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, महाराष्ट्री, कन्नड़ और तमिल आदि भाषाओं में, उसी तरह ललित कला के सभी अंगों–मंदिर, मूर्ति, चित्रकला आदि में जैन कलाकारों और कला प्रेमियों ने खूब काम किया है । भारत के सभी प्रदेशों में जैन समाज निवास करता है अतः जैन कला की सामग्री भी सभी प्रान्तों में बिखरी पड़ी है । जैन मंदिरों में आबू, राणकपुर आदि बहुत प्रसिद्ध हैं, इसी तरह जैन मूर्तियों में पाषाण और धातु की बहुत ही भव्य और कलात्मकता पाई जाती है । चित्रकला की भी जैन सामग्री बहुत सुरक्षित रही, फलतः अपभ्रंश काल की भारतीय चित्रकला की सामग्री सबसे अधिक जैनों से ही प्राप्त है ।

प्राचीन भारतीय चित्रकला के उदाहरण गुफाओं और भित्ति चित्रों में पाए जाते हैं । जैन गुफायें भी कुछ ऐसी मिली हैं, जिनमें प्राचीन चित्र उपलब्ध हैं । मध्यकालीन भित्ति चित्रण शैली की समाप्ति के साथ पुस्तकों में चित्र बनाने की प्रथा का प्रचलन चित्रण के इतिहास की अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी है । साहित्यिक साक्ष्यों के होते हुए भी दसवीं–ग्यारहवीं शताब्दी से पहले के ग्रन्थ–चित्रों के उदाहरण प्राप्त नहीं होते । चित्रण के इतिहास में एक नये आयाम का सूत्रपात करते हुए चित्रित ताड़पत्रीय ग्रन्थों की श्रृंखला में दशवैकालिकसूत्रवृत्ति तथा ओद्यनिर्युक्तिवृत्ति वह आदिकालीन चित्रित ग्रन्थ है जिनके भण्डारण का श्रेय तथा गौरव जैसलमेर ज्ञान ग्रन्थ भण्डार को प्राप्त है।[1] जैसलमेर, पाहण, खंभात आदि के जैन भण्डारों में 12वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक अनेकों सचित्र ताड़पत्रीय प्रतियां पाई जाती है । श्वेताम्बर जैन धर्म से सम्बन्धित ताड़पत्रीय पोथियों में 'निशीथचूर्णी', 'अंगसूत्र', 'दशवैकलिक लघुवृत्ति', 'त्रिषष्ठिशलाकापुरूपचरित', 'नेमिनाथचरित', 'कथासरितसागर', 'संग्रहणीसूत्र', 'उत्तराध्यनसूत्र', 'श्रावकप्रतिक्रमणचूर्णी' तथा 'कल्पसूत्र' हैं । इस सिचित्र पोथियों का लिपिकाल 1000 ई0 से 1500 ई0 के मध्य माना जाता है । यह पोथियां भारत में आज पाटन, बड़ौदा, खंभात, अहमदाबाद तथा जैसलमेर के निजी पुस्तकालयो या अमेरिका के बोस्टन स्थित संग्राहलयों में प्राप्त हैं [2]।

इन ताड़पत्रीय प्रतियों की सुरक्षा के लिये दोनों ओर काष्ठ की पट्टिकाएं रखी जाती थी । काष्ठ पट्टिकाओं के ज्यामितीय अभिप्राय तथा फूल–पत्ती से बने पैटर्न अपभ्रंश शैली तथा राजस्थानी शैली में पर्याप्त लोकप्रिय हुए ।[3] इनमे से कई सचित्र काष्ट पट्टिकायें 12–13वीं शताब्दी की जैसलमेर के बड़े ज्ञान भण्डार में सुरक्षित हैं ।

*वरिष्ठ प्रवक्ता, चित्रकला विभाग, आर0जी0पीजी0 कालेज,मेरठ
**शोध छात्रा, चित्रकला विभाग, आर0जी0पीजी0 कालेज, मेरठ ।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

14वीं–15वीं शताब्दी से वस्त्र पर भी चित्र बनाये जाने लगे। ऐसे बहुत से वस्त्र पट्ट भी जैन ज्ञान भण्डारों में और व्यक्तिगत संग्रहों में उपलब्ध हैं । 14वीं शताब्दी में कागज का प्रचार अधिक हो गया, तब से कागज की हस्तलिखित प्रतियां कल्पसूत्र, कलिकाचार्य कथा आदि की सचित्र प्रतियां मिलने लगी । आज भी ऐसी स्वर्णक्षरी और सचित्र प्रतियां जैनाचार्य और मुनियों द्वारा तैयार करवाई जाती हैं ।

सचित्र विज्ञप्ति–पत्र जैन चित्रकला की एक विशिष्टि उपलब्धि है । 17वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक ऐसे पचासों सचित्र विज्ञप्ति–पत्र प्राप्त हो चुके हैं । ये पत्र जैनाचार्यों को अपने यहाँ पधारने के लिये विनती के रूप में लिखे जाते थे । ऐसा संचित्र विज्ञाप्ति–पत्र विजय सेन सूरि का प्राप्त हुआ है, जिसे मुगलशाही चित्रकारों ने चित्रित किया है। अभी यह 17वीं शताब्दी का सचित्र विज्ञप्ति–पत्र आगम प्रभाकर स्वर्गीय मुनिश्री पुण्य विजय जी के संग्रह में है जो ला.द. भारतीय संस्कृति विद्या मंदिर, अहमदाबाद में प्रदर्शित है ।[4] इसके बाद 18–19वीं शताब्दी में तो ऐसे सचित्र विज्ञप्ति–पत्र पचास तैयार हुए । 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध का भी एक बहुत सुन्दर पत्र जयपुर का प्राप्त हुआ है । इसमें जयपुर नगर के भी बहुत सुन्दर चित्र पाये जाते हैं । 19वीं शताब्दी का उदयपुर का एक सचित्र विज्ञप्ति–पत्र है । वह करीब 72 फुट लम्बा है । बीकानेर के बड़े उपाश्रय के वृहद ज्ञान भण्डार में बीकानेर का एक सचित्र विज्ञप्ति–पत्र हमें पाटण, बड़ौदा आदि में देखने को मिलते हैं । गत तीस वर्षों में जो जैन सचित्र विज्ञप्ति–पत्र प्राप्त हुए है उनमें से कुछ करीब 100 फुट लम्बा है, जिनमें कुछ बीकानेर के ज्ञान भण्डार में हैं, कुछ अहमदाबाद के डेहला उपाश्रय, कुछ उपरोक्त पुण्य विजय जी के संग्रह में और कुछ कलकत्ता कला मर्मज्ञ श्री पूर्णानन्द जी नाहर के संग्रह में तथा सुरपत सिंहजी दुगड़, बहादुर सिंह जी सिंधी और गुजराती जैन सभा आदि में हमें ऐसे सचित्र विज्ञप्ति–पत्र देखने को मिले हैं, जो चित्रकला की दृष्टि से बहुत ही मूल्यवान हैं ।[5]

अब ऐसे विज्ञप्ति–पत्र कैसे तैयार किये जाते थे, और उसमें साहित्य और कला का कैसा सुन्दर समन्वय होता था यह भी देखना महत्त्वपूर्ण है । इन विज्ञप्तियों का भौगोलिक दृष्टि से भी विशेष महत्त्व है । अपर्वा चित्र शैली में अधिकांश तीर्थकर महावीर के जीवन दर्शन तथा घटनाओं से सम्बन्धित चित्रों का समावेश है । इस चित्र शैली के वैभव को हम जैन ग्रन्थ भण्डार पाटन, जैन भण्डार जैसलमेर, आर्ट गैलरी तथा बड़ौदा म्यूजियम बड़ौदा, कला भवन वाराणसी, लाल भाई संग्रह, अहमदाबाद, गायनका संग्रह, कलकत्ता तथा राजस्थान स्पेंसर संग्रह न्यूयार्क (अमेरिका) में देख सकते हैं ।[6] केवल जैन दृष्टि से ही नही भारतीय चित्रकला की दृष्टि से भी इनकी विविधता और विशिष्टता बहुत ही उल्लेखनीय है । जैन कला भावात्मकता से अधिक बुद्धित्वता की कला है, यह मुख सम्बन्धी तथा सुलिपि की कला है ।[7] समय–समय पर इस कला में काफी विकास होता रहा है । अनेक चित्र शैलियों में ये चित्रित किए गये हैं । अनेक तरह के दृश्य एवं भाव इनमें चित्रित किये गये हैं । सचित्र विज्ञप्ति–पत्रों में कुछ तो काफी छोटे हैं और कुछ बहुत बड़े हैं इनकी चौड़ाई में भी काफी विभिन्नता पाई जाती है। टिप्पणाकार बड़े लम्बे–लम्बे कागजों को जोड़कर ये बनाया करते थे। सबसे पहले इनमें प्रायः 'पूर्ण कलश' चित्रित किया जाता है, जो देखने में बहुत आकर्षक लगता था । इसके बाद

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

जैन आगमों में मान्य 8 मंगलिक के चित्र बनाये जाते थे । 2500 वर्षों से ये 8 प्रकार के मंगलिक जैन कला में उत्कीर्णित और चित्रित होते रहे हैं । इनमें स्वस्तिक और मच्छ आदि 8 वस्तुएं होती है । इसके बाद जैन तीर्थकरों की मातायें 14 महा स्वप्न देखती है उनका चित्रण किया जाता है । फिर माता शय्या पर सोई हुई उन स्पवनों को देख रही हों, इस तरह का चित्र बनाया जाता है । तदनंतर जैन तीर्थकरों में से पार्श्वनाथ आदि के चित्र बनाये जाते हैं । फिर जिस नगर से विज्ञप्ति–पत्र आचार्य श्री को भेजे जाते हैं उस नगर के मुख्य–2 स्थानों के चित्र बनाये जाते हैं । इन चित्रों से उस समय के उन नगर ग्रामों का दृश्य हमारे सामने उपस्थित हो जाता है । जिस रास्ते से आचार्य श्री नगर में पधारते हैं उस रास्ते के मकान, दुकान, मन्दिर, बीच में राज मार्ग, बाजार, बिकने वाली वस्तुएं, राज मार्ग पर चलते घोड़े, रथ, ऊँट आदि वाहन और कईयों में तो राजाओं की लम्बी सवारी पूरी लावलश्कर और सज्जा के साथ चित्रित की जाती है । उदयपुर के सचित्र विज्ञप्ति–पत्र में तो राज महलात् चित्रित करे राज मार्ग, मकान, दुकान मन्दिर आदि के चित्र बनाने के बाद पिछोला तालाब और उनमें उसके बीच में बने हुए राजमहल, महाराणा का नौका विहार और राजकीय ठाट–बाट की पूरी सवारी चित्रित की गई है । इससे उस समय की राजकीय सवारी में क्या–क्या सामान और वस्तुएं रहती थीं, लोगों की वेशभूषा क्या थी, कहाँ पर बाजार में क्या चीजें बिकती थीं, जैन और जैनेतर कौन–कौन से मंदिर रास्ते में पड़ते थे, इत्यादि अनेक बातों की जानकारी सहज ही मिल जाती है । तदनंतर आचार्य महाराज अपने मुनियों के साथ नगर के दरवाजे दिखाये जाते हैं । श्रावक श्राविकाएं उन्हें वंदन करने के लिए पहुंचते हैं । इस तरह एक बहुत ही भव्य दृश्य इन विज्ञप्ति–पत्रों में देखने को मिलता है । चित्रों के बाद मूल लेख प्रारम्भ होता है, जिसमें जहाँ आचार्य श्री विराजते हैं उस नगर का, आचार्य श्री के गुणों का लंबा विवरण देकर, जहाँ से पत्र भेजा जाता है वहाँ के आचार्य श्री के आज्ञानुयायी साधुओं और श्रावकों आदि की वंदना सूचित करते हुए अपने वहाँ पधारने की विनती लिखी जाती है । इस प्रसंग में जहाँ से लेख भेजा गया और जहाँ को भेजा गया उन दोनों नगरों का काव्यमय गजल आदि के रूप में वर्णन कवियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है । आचार्य श्री के श्री गुणगीत लिखे जाते हैं । अंत में जहाँ से पत्र भेजा जाता है, वहाँ के प्रधान श्रावकों के हस्ताक्षर लिखे रहते हैं । इससे उस समय उस नगर में कौन–कौन मुख्य व्यक्ति थे, इसकी भी जानकारी मिल जाती है ।

जिस तरह प्रजा में राजा का बड़ा सम्मान होता है उसी तरह धर्माचायों का भी उनके अनुयायी साधु साध्वियों और श्रावक श्राविकाओं द्वारा बहुत बहुमान किया जाता रहा है । इसलिए प्रत्येक नगर का राजा और जैन संघ यही चाहता था कि हमारे यहाँ धर्माचार्य पधारें और चौमासा करें, जिससे जैन समाज को नीति और धर्म की पूरी प्रेरणा मिले, लोगों का जीवन सदाचारी और ज्ञानवान बने । फलतः अपने–अपने सम्प्रदाय व गच्छ के आचार्यों को ऐसे विशिष्ट, विज्ञप्ति–पत्र भेजे जाते थे, जिनको तैयार करने में बहुत समय, श्रम और द्रव्य व्यय होता था। विद्धान मुनिगण अपनी काव्य प्रतिभा और विद्वता का ऐसे पत्रों के लेखन में उपयोग करते थे । श्रावक लोग कुशल चित्रकारों द्वारा सुन्दर से सुन्दर चित्र बनवाने में काफी रूपये खर्च करते थे । कलाकारों को इससे आजीविका और बड़ा प्रोत्साहन मिलता था ।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

सचित्र विज्ञप्ति–पत्र की प्रथा चालू होने से पहिले प्राकृत संस्कृत में गद्य और पद्य विद्ववानों द्वारा लिखे व भेजे जाते रहे हैं । इनमें कई तो बहुत ही महत्व के हैं । ऐसे विज्ञप्ति–पत्रों का एक संग्रह मुनि जिनविजय जी ने सिंधी जैन ग्रन्थमाला से प्रकाशित करवाया है । इन पत्रों में अपने यहाँ के पर्युषण आदि के धार्मिक समाचार और यात्राओं का वर्णन भी रहा करता था । इससे इतिहास एवं भूगोल संबंधी अनेकों महत्वपूर्ण सूचनाएं मिल जाती हैं । पहले नगर वर्णन आदि काव्य रूप में लिखे जाते थे । वे सचित्र विज्ञप्ति–पत्रों में दृश्य रूप में चित्रित किये जाने लगे । चित्रों में रंगों का वैविध्य भी उल्लेखनीय है । पशु–पक्षी वृक्ष फल पत्ते आदि अनेक प्रकार के चित्र सचित्र विज्ञप्ति–पत्रों में पाये जाते हैं । अतः अनेक दृष्टियों से ऐसे पत्रों का बहुत ही महत्व है । सचित्र विज्ञप्ति–पत्रों के चित्रों के अध्ययन से चित्र शैलियों की भिन्नता और स्थानीय विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है । आवश्यकता है कि प्राप्त सचित्र विज्ञप्ति–पत्रों का गहराई से और तुलनात्मक अध्ययन किया जाये । ये सचित्र विज्ञप्ति–पत्र श्वेताम्बर मूर्ति पूजक समाज द्वारा ही तैयार किये जाते रहे हैं । इनका आंशिक अनुकरण राम स्नेही आदि अन्य सम्प्रदायों में भी हुआ है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

(1) Khandelwal, Karl :- Rajput Painting, Pennsy Lvania State University, B.R. Pub. 2003, P-6

(2) वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाशक बुक डिपो, बरेली । 1973, पृ0–107

(3) श्रोत्रिय शुकदेव : भारतीय ग्रन्थ चित्रण की सामग्री एवं पद्धति, चित्रायन प्रकाशन, मुजफ्फरनगर, 1997, पृ0–61

(4) उपाध्याय विद्यासागर : आकृति, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, जनवरी 1976, पृ0–87

(5) उपाध्याय विद्यासागर : आकृति, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, जनवरी 1976, पृ0–87

(6) गोस्वामी, प्रेमचन्द : भारतीय चित्रकला का इतिहास , पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1999, पृ0–87

(7) दास, कुसुम : भारतीय कला परिचय, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1977, पृ0–120

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247